पाठ -22

पंच परमेश्वर

● मुंशी प्रेमचंद

आइए, सीखें : पंचायती राज एवं न्याय व्यवस्था का ज्ञान। मित्रता प्रेम व सहानुभूति की भावना जाग्रत करना। शुद्ध लेखन तथा उच्चारण का ज्ञान।

अलगू चौधरी और जुम्मन शेख में गाढ़ी मित्रता थी। अलगू चौधरी ने जुम्मन शेख के पिता से उसके साथ ही शिक्षा पाई थी। दोनों को एक-दूसरे पर पूरा भरोसा था और गाढ़े समय में दोनों मित्र एक-दूसरे का साथ खुलकर देते थे। जब अलगू चौधरी कहीं बाहर जाता, तब अपना घर जुम्मन के भरोसे छोड़ जाता। इसी तरह जुम्मन शेख अपने घर-द्वार की जिम्मेदारी अलगू चौधरी को सौंप जाता था।

जुम्मन की एक वृद्धा मौसी थी। जुम्मन के सिवा इस दुनिया में उसका और कोई नहीं था। वह जुम्मन के साथ ही रहती थी । जब तक उसने अपने खेत और घर की संपत्ति जुम्मन के नाम नहीं लिख दी, तब तक उसकी पूरी खातिरदारी होती रही। लेकिन संपत्ति लिखते ही उसकी खातिरदारी में कमी आ गई, यहाँ तक कि रोटी-दाल तक के लाले पड़ने लगे। जुम्मन की पत्नी गर्म मिजाज की थी। वह रोटियों के साथ कड़वी बातें भी कहने लगी, ''बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी। दो-तीन बीघे ऊसर जमीन क्या दे दी, मानों हमें खरीद लिया। जितना रूपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव खरीद लेते।''जुम्मन शेख भी निष्ठुर हो गया था।

कुछ दिन खालाजान ने सुना और सहा, पर जब न सहा गया, तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने उसकी और कोई ध्यान न दिया। अंत में एक दिन उसकी मौसी ने कहा, ''बेटा तुम्हारें साथ मेरा निर्वाह न हो सकेगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो। मैं अपना पका खा लूँगी।''

जुम्मन ने दुष्टता से उत्तर दिया। ''रुपये क्या यहाँ फलते हैं?'' मौसी ने नम्रता से कहा, ''मुझे कुछ रूखा-सूखा चाहिए भी कि नहीं।'' जुम्मन ने क्रुद्ध होकर कहा, ''तो क्या यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो!''

शिक्षण संकेत -

♦ उचित हाव-भाव के साथ बच्चों को कहानी सुनाएँ तथा उनसे सुने। ♦ प्रेमचंद की अन्य कहानियों की चर्चा कीजिए। ♦ 'दूध का दूध और पानी का पानी' भाव स्पष्ट करने वाली अन्य कहानियाँ सुनाइए। ♦ 'निष्ठुर''क्रुद्ध''जुम्मन 'आदि शब्दों को लिखवाएँ।

अब खालाजान के पास पंचायत बुलाने के अलावा और कोई चारा न था। मौसी ने दौड़-धूप करके पंचायत बैठाई। जब सरपंच चुनने की बात पर जुम्मन आना-कानी करने लगा, तब खालाजान ने अलगू चौधरी को ही सरपंच चुना। अलगू चौधरी ने कहा, ''जुम्मन मेरा मित्र है। मुझे सरपंच मत बनाओ।''

मौसी ने गंभीर स्वर से कहा, बेटा, ''दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। पंचों के दिल में खुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है।''

जुम्मन यह सोचकर मन ही मन खुश था कि मेरा मित्र ही सरपंच बना है। वह निश्चय ही मेरे पक्ष में फैसला देगा। मौसी की बात सुनकर अलगू चौधरी का सोया ईमान जाग उठा। वह सरपंच बना। उसके आस-पास अन्य पंच बैठे थे। पंचों ने बुढ़िया के मामले पर विचार किया। अलगू ने जुम्मन से ऐसे-ऐसे प्रश्न किए कि उसके होश ठिकाने लग गए। जुम्मन हैरान था कि क्या अलगू उसकी दोस्ती भूल गया जो इस मामले में ऐसे प्रश्न कर रहा है। आखिर अलगू ने फैसला सुनाया, ''जुम्मन शेख, पंचों ने इस मामले पर विचार कर लिया है। हमारी राय यह है कि मौसी के खेत से इतनी कमाई होती है कि उसे माहवार खर्च दिया जा सके। यदि तुम इस बात से राजी नहीं हो तो खेतों की लिखा -पढ़ी तुम्हारे नाम पर नहीं रहेगी।''

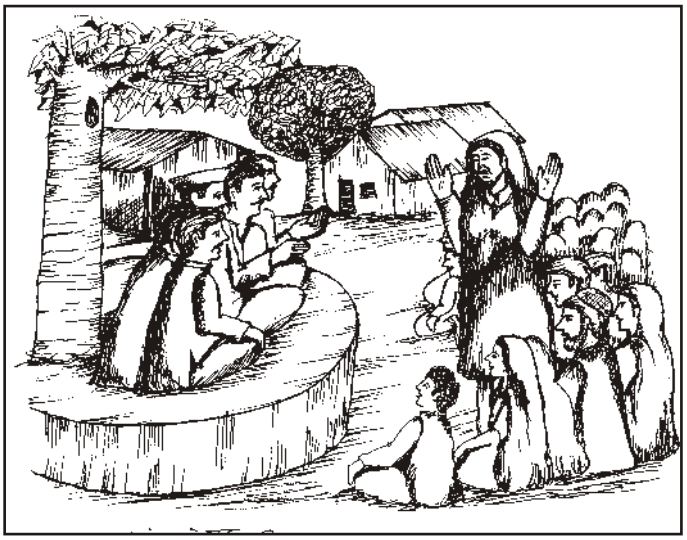

उस दिन से जुम्मन अलगू चौधरी का जानी-दुश्मन बन गया। वह अलगू चौधरी से बदला लेने का मौका ढूँढता रहा। शीघ्र ही उसे ऐसा मौका मिल गया।

अलगू ने बैलों की एक नई जोड़ी खरीदी थी। दोनों बैल मजबूत और कमाऊ थे। पंचायत को अभी एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था कि उनमें से एक बैल मर गया। जुम्मन ने दोस्तों से कहा ''यह दगाबाजी की सजा है। इंसान भले ही संतोष कर जाए, पर खुदा बदी की सजा देकर ही रहता है।''

अब अकेला बैल अलगू के काम का न था। इसलिए उसने गाँव के बनिये समझू साहू के हाथ बैल बेच दिया। एक माह में बैल का दाम चुकाने का वायदा ठहरा।

समझू साहू गाँव से अनाज, गुड़ आदि लादकर मंडी ले जाता और वहाँ से नमक, तेल आदि गाँव लाता। नया और मजबूत बैल पाकर वह दिन-भर में तीन-तीन, चार-चार चक्कर लगाने लगा। बैल से मेहनत तो

इतनी लेता, पर उसके दाने-पानी का उचित प्रबंध बिलकुल नहीं करता। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में बैल की हड्डी पसली दिखाई देने लगी।

एक दिन चौथी खेप में साहू ने दूना बोझ लादा। दिन भर के थके जानवर के पैर न उठते थे। पर साहू जी कोड़े बरसा-बरसा कर दौड़ाने लगे। थोड़ी दूर जाकर बैल सुस्ताने के लिए रूकना चाहता था। लेकिन साहू जी को जल्द पहुँचने की चिन्ता थी। अतएवं उन्होंने कई कोड़े बड़ी निर्दयता से बरसाए। बैल ने जी-जान से जोर लगाया, पर अब की बार शक्ति ने जवाब दे दिया। वह जमीन पर गिरा और ऐसा गिरा कि फिर उठा ही नहीं। वह मर चुका था।

रात में साहूजी की गाड़ी में लदा सामान और रूपये चोर ले गए। इस घटना को हुए कई महीने बीत गए। अलगू जब अपने बैल का दाम माँगता तब साहू जली-कटी सुनाने लगता। हारकर अलगू चौधरी को पंचायत बुलानी पड़ी। समझू को अलगू और जुम्मन के बैर का हाल मालूम था। इसलिए उसने जुम्मन को सरपंच चुना।

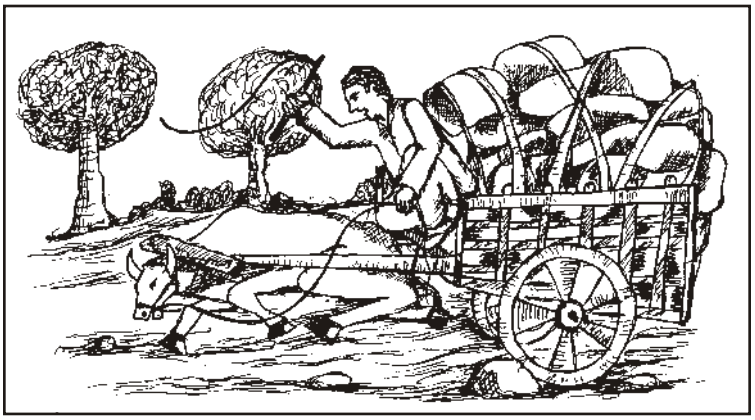

सरपंच के आसन पर बैठते ही जुम्मन का मन बदल गया। वह अलगू चौधरी से अपना पुराना बैर-भाव भूल गया। उसमें उत्तरदायित्व का बोध जग गया। पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करना शुरू किया। अलगू चौधरी और समझू साहू ने अपनी-अपनी बातें बताई। सभी पंच इस बात पर एकमत थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए। परन्तु दो पंच इस कारण से रियायत करना चाहते थे कि बैल के बीच रास्ते में मर जाने के कारण समझू की हानि हुई है। इसके विपरीत अन्य पंच पूरी कीमत दिलाने के अलावा समझू को दण्ड भी देना चाहते थे क्योंकि उसने बैल को निर्दयता से मारा था। उनके अनुसार बैल की मृत्यु इस कारण हुई थी कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके चारे -पानी का अच्छा प्रबंध न किया गया था। अन्त में जुम्मन ने फैसला सुनाया, ''अलगू चौधरी और समझू साहू, पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू साहू के लिए उचित है कि बैल का पूरा दाम चुका दें। जिस वक्त उन्होंने बैल खरीदा था उस समय उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय अलगू पूरी कीमत लेकर ही बैल देते तो यह सवाल ही पंचायत के सामने न उठाया जाता।''

उपस्थित जनता जय-जयकार कर उठी, ''पंच परमेश्वर की जय'' सभी कह रहे थे, ''इसी को न्याय कहते हैं- दूध का दूध और पानी का पानी। यह मनुष्य का काम नहीं, यह परमेश्वर का काम है। पंच के सामने

खोटे को कौन खरा कर सकता है? इतना अच्छा न्याय न्यायालय कहाँ दे पाता है?''

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले, ''भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा शत्रु बन गया था, पर मुझे आज पता चला कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का मित्र रहता है, न शत्रु। न्याय के सिवा उसे और कुछ सूझता ही नहीं।'' अलगू भी खुशी से रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। दोनों उस दिन से दोस्त हो गए। मित्रता की मुरझाई लता फिर से हरी हो गई।

नए शब्द

गाढ़ समय = विपत्ति या कष्ट का समय। **खुलकर साथ देना** = बिना छिपाए सबके सामने उदारता से साथ देना। **खातिरदारी** = स्वागत, सत्कार, आवभगत । **गर्म मिजाज** = क्रोधी स्वभाव। **ऊसर** = बंजर भूमि **रोटी दाल के लाले पड़ना** = जिन्दगी गुजारने में बहुत कठिनाई होना। **पेट में झोंकना** = खाने-खिलाने में बेकार खर्च करना। **निष्ठुर** = बेरहम, निर्दय, सख्त, कठोर हृदय वाला। **कोई चारा न होना** = कोई उपाय न होना, लाचारी। **सोया ईमान जाग उठना** = विवेक जागना, ईमानदारी का भाव आना। **खाला** = मौसी **होश ठिकाने लगना** = भ्रम दूर होना, बुद्धि ठीक होना, भूल का पछतावा होना। **जानी दुश्मन** = जान का शत्रु । **बदी**- बुराई। **जी- जान से** = पूरी ताकत से । **जली- कटी** = चुभने वाली बात । **दूध का दूध, पानी का पानी** = सच्चा न्याय । **दिलों का मैल धुल जाना** = मन की कड़वाहट दूर होना, मन साफ होना। **गाढ़ी दोस्ती** = घनिष्ठ मित्रता।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न-**

(क) सही जोड़ी बनाइए -

अलगू चौधरी ने कहा	-	बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी।
जुम्मन की पत्नी ने कहा	-	दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता।

मौसी ने कहा – रूपये क्या यहाँ फलते हैं?

जुम्मन ने कहा – जुम्मन मेरा मित्र है।

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

अ. दोस्ती के लिए कोई अपना ..... नही बेचता। (मकान, ईमान)

ब. अलगू ने ..... की नई जोड़ी खरीदी थी। (बैलों, ऊँटो)

स. एक दिन ..... खेप में साहू ने दूना बोझा लादा। (तीसरी, चौथी)

द. ..... की मुरझाई लता फिर से हरी हो गई। (शत्रुता, मित्रता)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) गाढ़ी मित्रता किसके बीच थी ?

(ब) जुम्मन खाला की पूरी खातिरदारी कब तक करता रहा?

(स) अलगू चौधरी सरपंच क्यों नहीं बनना चाहता था?

(द) अलगू चौधरी ने बैल किसको बेचा था?

(ई) ''पंच परमेश्वर की जय'' का घोष किसने किया?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) जुम्मन की मौसी ने पंचायत क्यों बुलाई थी?

(ब) सरपंच अलगू चौधरी ने खाला जान के मामले में क्या फैसला सुनाया?

(स) जुम्मन को उत्तर दायित्व का बोध कब हुआ?

(द) जुम्मन ने समझू साहू के मामले में क्या फैसला सुनाया?

(ई) ''दूध का दूध और पानी'' का पानी इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए –

अ. गाढ़ी, वृद्धा, संपत्ति, दुष्टता, नम्रता, क्रुद्ध

2. दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए –

अ. चोधरी, चौधरी, चौधरि, चौघरी –

ब. मीसी, मोसी, मौसी, मौशी –

स. खातिरीदारी, खातिरदारी, खातीरदारी –

द. रुपये, रूपये, रुपिये, रुपए –

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

घर–द्वार, आना–कानी, आस–पास, लिखा–पढ़ी, दाना–पानी

4. रेखांकित शब्दों के स्थान पर विपरीत शब्द रखकर वाक्य पुनः लिखिए–

अ. राम श्याम का <u>मित्र</u> था। .....

ब. अलगू चौधरी <u>बेईमान</u> था। .....

स. जुम्मन की पत्नी <u>मीठी</u> बातें कहती थीं। .....

द. समझू साहू बैलों को <u>सूखा</u> घास खिलाता था। .....

ञ. पंचायत ने खालाजान को <u>सजा</u> दी। .....

5. उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उचित रूप बनाकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

- मौसी ने दौड़–धूप करके पंचायत .....। (बैठना)

  मौसी ने दौड़–धूप करके पंचायत बैठाई।
- मौसी की बात सुनकर अलगू चौधरी का सोया ईमान .....। (जागना)
- पंचों के दिल में खुदा .....। (बसना)
- अलगू चौधरी ने बैलों की एक नई जोड़ी .....। (खरीदना)
- न्यायाधीश ने ऐसे–ऐसे सवाल किए कि चोर के होश .....। (उड़ना)
- शैलेन्द्र ने एक महीने में मकान की कीमत देने का वादा .....। (करना)

6 अधोलिखित सरल वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्यों को पहचान कर दिए गए स्थान में लिखिए–

- राम मिठाई खरीदने बाजार गया। [ ]
- जब अलगू चौधरी कहीं बाहर जाता था तब अपना घर जुम्मन के भरोसे छोड़ जाता था। [ ]
- जुम्मन की पत्नी गर्म मिजाज की थी। [ ]

- कुछ दिन खाला ने सुना और सहा, पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। ☐
- जुम्मन शेख भी निष्ठुर हो गया था। ☐
- यह मनुष्य का काम नहीं, यह परमेश्वर का काम है। ☐
- जितना रूपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव खरीद लेते। ☐

अब करने की बारी

1. 'सच्चा न्याय' इस भाव से सम्बन्धित कहानी खोजकर पढ़िए और बाल सभा में सुनाइए।
2. 'लोकतंत्र में पंचायत के महत्व' पर दस वाक्य लिखिए।
3. इस कहानी का नाट्य रूपांतर कर मंचन कीजिए।